JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इण्टरमीडिए ट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

[1]अमित कुमार सिंह, [2]डॉ0 राकेश कुमार आजाद, [3]डॉ0 आर0पी0 मिश्रा
[1]सहायक आचार्य एवं शोधछात्र, [2]सह आचार्य एवं शोध–पर्यवेक्षक, [3](विभागाध्यक्ष), सह आचार्य एवं शोध सह–पर्यवेक्षक
[1]शिक्षक शिक्षा विभाग, [2]शिक्षक शिक्षा विभाग, [3]शिक्षक शिक्षा विभाग,
[1]हिंदू कॉलेज मुरादाबाद, [2]बरेली कॉलेज बरेली, [3]हिंदू कॉलेज मुरादाबाद

सार

विकासोन्मुख प्रक्रिया से प्रभावित होते हुए भी हमारे राष्ट्र में व्यावसायिक पिछड़ापन है। विश्वस्तरीय प्रतियोगिता के युग में यह आवश्यक हो गया है कि विद्यार्थी विद्यालय स्तर से ही अपनी योग्यता व क्षमता के अनुरूप प्रयास करे। व्यवसाय योजना की प्रक्रिया को विद्यालयी जीवन से ही प्रारम्भ कर देना चाहिए और इसी के अनुरूप प्रयास किये जाने चाहिए। इससे प्रतियोगिता के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न करने में सहायता मिल सकेगी। अन्यथा इस प्रतियोगिता के युग में वे अधिक समय तक टिक नहीं पायेंगे और दिग्भ्रमित होकर अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं के शिकार हो सकते हैं। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता ने यह जानने की आवश्यकता अनुभव की है कि क्या व्यावसायिक आकांक्षा और विद्यालयी वातावरण में कोई सम्बन्ध है अथवा नहीं। साथ ही यह जानने की आवश्यकता भी महसूस की गयी है कि क्या विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में आरक्षित तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में किसी प्रकार की भिन्नता है अथवा नहीं।

संकेत शब्द

व्यावसायिक पिछड़ापन, अभिरूचियाँ, मनोवैज्ञानिक समस्याएं, व्यावसायिक आकांक्षा विद्यालयी वातावरण

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति कुछ अन्तः निहित शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। उसकी रूचियाँ, अभिरूचियाँ तथा क्षमतांए भिन्न–भिन्न होती है। अपनी रूचियों, अभिरूचियों व क्षमताओं के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति भिन्न–भिन्न व्यावसायों को प्राप्त करने की कामना करता है एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहता है। अपनी रूचि के अनुसार व्यवसाय प्राप्त करने की यही कामना व्यावसायिक आकांक्षा कहलाती है।

औद्योगिक व तकनीकी विकास, वैज्ञानिक आविष्कार, मनुष्य की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं में वृद्धि ने जहाँ एक ओर नित नये व्यावसायिक क्षेत्रों को जन्म दिया है, वहीं दूसरी ओर जनसंख्या विस्फोट ने इन व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रतियोगता को अत्यन्त कठिन बना दिया है। वर्तमान व्यवसायों की प्रवेश प्रक्रियाओं पर यदि दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि प्रत्येक क्षेत्र के व्यवसायों में प्रवेश हेतु प्रतियोगिता के लिए लाखों की संख्या में अभ्यर्थी सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में उम्मीदरवारों की बढ़ती भीड़ उनकी व्यावसायिक दिशाहीनता को प्रकट करती है। इस दिशाहीनता के कारण वे एक विशेष व्यावसायिक आकांक्षा को निर्धारित न कर सभी व्यवसायों में अपना भाग्य अजमाते हैं। अंत में सफलता न मिलने पर कुंठा का शिकार हो जाते है।

व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों कें संदर्भ में किए गए एक महत्वूपर्ण अध्ययन (आरती कन्नौजिया 2003) के अन्तर्गत सम्बन्धित साहित्य का विश्लेषण करते हुए पाया कि व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है। ये दोनों वर्ग हैं व्यक्तिगत अथवा मनोवैज्ञानिक कारक तथा वातावरणीय कारक। मनोवैज्ञानिक कारकों के अन्तर्गत लिंग, वृद्धि, व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक वर्ग कला, विज्ञान एवं वाणिज्य आदि आते हैं। वातावरणीय कारकों में परिवार व अभिभावकों की अभिवृत्ति, सामाजिक आर्थिक स्तर, विद्यालय आदि रखे जा सकते हैं। बालक के विकास से सम्बद्ध प्रायः सभी पक्ष वातावरणीय परिस्थितियों द्वारा सतत् रूप से प्रभावित होते हैं। चूंकि बालक के जीवन का एक बड़ा भाग विद्यालय में ही बीतता है। अतः बालक की व्यावसायिक आकांक्षा पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य पड़ता होगा, इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विद्यालय की भूमिका बालक के मात्र बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है अपितु विद्यालय एक ऐसा वातावरण है जिसमें बालक के वांछित विकास के लिए विशेष क्रियाओं तथा व्यावसायों की शिक्षा दी जाती है। विद्यालय में बालक कुछ ऐसी क्रियाओं में भी अनुशासित होते हैं। जो

सांसारिक जीवन में स्थायी महत्व की होती हैं तथा विद्यालय बालक के समग्र विकास में एक समन्वित उपागम में रूप में भूमिका का निर्वाह करता है।

इण्टरमीडियट स्तर

प्रस्तुत शोध पत्र में इण्टरमीडियट स्तर से तात्पर्य उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा बोर्ड इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 12 के विद्यार्थियों से है।

व्यावसायिक आकांक्षा

व्यावसायिक आकांक्षा परस्पर सम्बन्धित दो शब्दों व्यवसाय और आकांक्षा से बना है। इनमें से प्रथम शब्द व्यवसाय का तात्पर्य जीविकोपार्जन अर्थात जीविका कमाने के महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं से है। दूसरे शब्द आकांक्षा का शाब्दिक अर्थ अभिलाषा या इच्छा से है, जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति अपने लक्ष्य को निर्धारित कर उसकी प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है। इस प्रकार जब किसी व्यक्ति की इच्छा या अभिलाषा से किसी जीविकोपार्जन के महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं की प्राप्ति होती है और उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता है तो उसकी यह इच्छा या अभिलाषा व्यावसायिक आकांक्षा कहलाती है।

विद्यालयी वातावरण

विद्यालयी वातावरण का तात्पर्य विद्यालय की भौतिक व्यवस्था, विद्यालय प्रशासन व्यवस्था, शिक्षक–छात्र सम्बन्ध, पाठ्यक्रम एवं समय चक्र, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, पुस्तकालय, शिक्षक अभिभावक सम्बन्ध इत्यादि महत्वपूर्ण चरों से है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. इण्टरमीडिएट स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके उच्च तथा निम्न विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

3. इण्टरमीडिएट स्तर के सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके उच्च तथा निम्न विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. इण्टरमीडिएट स्तर के उच्च विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का उनके लिंग एवं जातीय वर्ग के संदर्भ में अध्ययन करना।
5. इण्टरमीडिएट स्तर के निम्न विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का उनके लिंग एवं जातीय वर्ग के संदर्भ में अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. इण्टरमीडिएट स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके उच्च तथा निम्न विद्यालयी वातावरण के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. इण्टरमीडिएट स्तर के सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके उच्च तथा निम्न विद्यालयी वातावरण के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. इण्टरमीडिएट स्तर के उच्च विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का उनके लिंग एवं जातीय वर्ग के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. इण्टरमीडिएट स्तर के निम्न विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का उनके लिंग एवं जातीय वर्ग के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य बरेली शहर में स्थित उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा बोर्ड इलाहबाद द्वारा मान्यता प्राप्त इंटरमीडिएट विद्यालयों तक ही सीमित है। इस अध्ययन को केवल कक्षा 12 के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है, प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक विधि से चयनित छह विद्यालयों, जिसमें तीन बालिकाओं तथा तीन बालकों के हैं, से विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। शोध कार्य के अन्तर्गत न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों के केवल 120 विद्यार्थी सम्मिलित हैं जिसमें 60 छात्रों तथा 60 छात्राओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। विद्यालयी वातावरण के अनेक आयाम हैं लेकिन प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालयी वातावरण के केवल कुछ पक्षों सृजनात्मक, उद्दीपन, संज्ञानात्मक, प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमोदन, अस्वीकृति तथा नियन्त्रण तक ही सीमित है।

कनौजिया (2001), ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर उनके स्वत्वबोध एवं प्रत्यक्षित विद्यालयी वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया। इस शोध में लखनऊ शहर के 6 माध्यमिक विद्यालयों के 240 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. भिन्न–भिन्न प्रकार के शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की स्वत्वबोध स्तर में अन्तर पाया गया।
2. भिन्न–भिन्न लिंग के विद्यार्थियों के स्तत्वबोध में अन्तर पाया गया।
3. भिन्न शिक्षा संस्थानों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के प्रत्यक्षण में अन्तर पाया गया।
4. विद्यालीय वातावरण के विभिन्न आयामों के सन्दर्भ में भिन्न–भिन्न लिंग के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

राजा के. (2006), ने आगरा मंडल के शहरी व ग्रामीण स्कूलों के 85 छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन उनके व्यक्तित्व, बुद्धि व सामाजिक स्तर के संबंध में किया तथा पाया कि

1 बुद्धिमान छात्र समस्या को सावधानी से हल कर लेते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं।

2 बुद्धि एवं सामाजिक स्थिति छात्रों में त्रुटियों को कम करने में सहायता करती है।

अध्ययन की कार्ययोजना

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि को विषयवस्तु की प्रकृति के अनुकूल पाया है, जो वर्णनात्मक अनुसंधान का एक प्रकार है। मुख्यतः सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किसी क्षेत्र में निश्चित तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है। सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों में प्रचलित व्यवहारों, विश्वास, दृष्किोण या अभिवृत्तियों आदि से होता है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र के लिए सर्वेक्षण विधि को आधार बनाया गया। अध्ययन में चुने हुए विद्यार्थियों को छात्र/छात्राओं तथा सामान्य/आरक्षित में वर्गीकृत करके अध्ययन कार्य को आगे बढ़ाया गया है। विद्यार्थियों पर परीक्षण को प्रशासित करके, प्रत्युत्तरों को फलांकन किया गया है तथा निष्कर्षों को प्राप्त करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के लिए डॉ0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित विद्यालयी वातावरण सूची का प्रयोग किया गया है। व्यावसायिक आकांक्षा के लिए डॉ0 जे0एस0 ग्रेवाल द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

तालिका 1

इण्टरमीडियट स्तर के छात्र–छात्राओं के उच्च तथा निम्न विद्यालयी वातावरण के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों का विवरण :

नियंत्रित विद्यालयी वातावरण	छात्र			छात्राएं			टी0मान
	सं0	मध्यमान	मा0वि0	सं0	मध्यमान	मा0वि0	
उच्च विद्यालयी वातवरण	16	56.38	8.19	16	51.41	11.30	1.33
निम्न विद्यालयी वातावरण	16	49.67	8.09	16	51.20	7.98	0.09

उपर्युक्त तालिका उच्च तथा निम्न विद्यालय वातावरण वाले इण्टरमीडियट स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों का विवरण प्रस्तुत करती है। इस तालिका के अवलोकन करने से पता चलता है कि उच्च एवं निम्न विद्यालयी वातावरण वाले छात्र–छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 2

इण्टरमीडियट स्तर के सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के उच्च तथा निम्न विद्यालयी वातावरण के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों का विवरण :

नियंत्रित विद्यालयी वातावरण	सामान्य वर्ग के विद्यार्थी			आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी			टी0मान
	सं0	मध्यमान	मा0वि0	सं0	मध्यमान	मा0वि0	
उच्च विद्यालयी वातवरण	16	55.38	11.72	16	51.73	7.20	1.03
निम्न विद्यालयी वातावरण	16	52.06	8.64	16	49.60	7.60	0.84

उपर्युक्त तालिका उच्च तथा निम्न विद्यालय वातावरण वाले इण्टरमीडियट स्तर के सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों का विवरण प्रस्तुत करती है। इस तालिका के अवलोकन करने से पता चलता है कि उच्च एवं निम्न विद्यालयी वातावरण वाले सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् व्यावसायिक आकांक्षा पर जाति वर्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 3

इण्टरमीडियट स्तर के उच्च विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर उनके आदर्शवादी एवं यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों का विवरण :

विद्यार्थी	सं0	आदर्शवादी व्यावससायिक आकांक्षा		यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षा		टी0मान
		मध्यमान	मा0वि0	मध्यमान	मा0वि0	
सम्पूर्ण विद्याथी	16	26.44	5.69	26.81	5.87	0.25
छात्र	16	27.38	3.50	29.00	6.32	0.90
छात्राएं	16	26.12	7.30	25.29	5.16	0.38
साामन्य वर्ग के विद्यार्थी	16	27.63	7.29	27.75	5.69	0.05
आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी	16	25.40	3.52	26.33	5.69	0.54

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से इण्टरमीडियट स्तर के उच्च विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर आदर्शवादी एवं यथार्थवाद व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों का ज्ञात होता है। तालिका में प्रदर्शित आंकड़ों के अवलोकन से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण विद्यार्थियों, छात्र–छात्राओं एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों व आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग एवं जातीय वर्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

इस निष्कर्ष से स्पष्ट है कि उच्च विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों के आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा एवं यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षा में किसी प्रकार का उल्लेखनीय अंतर नहीं है। उच्च विद्यालय वातावरण वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग एवं जातीय वर्ग का भी कोई प्रभाव नहीं है।

तालिका 4

इण्टरमीडियट स्तर के निम्न विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर उनके आदर्शवादी एवं यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों को विवरण :

विद्यार्थी	सं0	आदर्शवादी व्यावससायिक आकांक्षा		यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षा		टी0मान
		मध्यमान	मा0वि0	मध्यमान	मा0वि0	
सम्पूर्ण विद्याथी	32	26.72	4.36	24.31	5.68	0.31
छात्र	16	26.40	4.64	23.27	5.69	1.65

छात्राएं	16	26.96	4.46	24.27	5.75	1.42
सामान्य वर्ग के विद्यार्थी	16	27.19	4.65	24.89	6.53	1.55
आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी	16	26.13	4.26	23.47	4.85	1.60

उपरोक्त तालिका इण्टरमीडियट के निम्न विद्यालय वातावरण वाले विद्यार्थियों के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर आदर्शवादी एवं यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान प्राप्तांकों को विवरण प्रस्तुत करती है। इस तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि निम्न विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों के यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षा एवं आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और इस पर लिंग एवं जातीय वर्ग का भी कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात् निम्न विद्यालयी वातावरण वाले सम्पूर्ण विद्यार्थी छात्र–छात्राओं एवं सामान्य व आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के आदर्शवादी तथा यथार्थवादी व्यावहारिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य इण्टरमीडियट स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य व आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का उनके विद्यालयी वातावरण के सम्बन्ध में अध्ययन करना। पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पनाओं के परिक्षण कर प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विवेचन के उपरान्त उनका विश्लेषण व व्याख्या सम्बन्धी क्रियायें सम्पन्न की गयीं तथा महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किए गये जो इस प्रकार हैं

1. इण्टरमीडियट स्तर के छात्र एवं छात्राओं के उच्च एवं निम्न विद्यालय वातावरण के आधार पर उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के अध्ययन के फलस्वरूप उच्च व निम्न विद्यालयी वातावरण वाले छात्र–छात्राओं की दीर्घ एवं अल्प कालिक यथार्थवादी तथा आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2. इण्टरमीडियट स्तर के सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न विद्यालय वातावरण के आधार पर उनकी व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन के फलस्वरूप उच्च व निम्न विद्यालय वातावरण वाले सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की दीर्घ एवं अल्पकालिक यथार्थवादी तथा आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3. इण्टरमीडियट स्तर के उच्च विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर उनकी व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन के फलस्वरूप उच्च विद्यालय वातावरण वाले विद्यार्थियों

के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर उनकी दीर्घ एवं अल्प कालिक यथार्थवादी तथा आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

4. इण्टरमीडियट स्तर के निम्न विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर उनकी व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन के फलस्वरूप निम्न विद्यालय वातावरण वाले विद्यार्थियों के लिंग एवं जातीय वर्ग के आधार पर उनकी दीर्घ एवं अल्प कालिक यथार्थवादी तथा आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध पत्र विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, परामर्शदाताओं, शैक्षिक प्रशासकों व शैक्षिक नीति निर्धारकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी होगा। इस अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि उच्च विद्यालयी वातावरण व्यावसायिक आकांक्षा की दृष्टि से उपयोगी होता है इसके अतिरिक्त विद्यार्थी यह भी जान सकेंगे कि विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयाम उनके किन–किन व्यावसायिक आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष अभिभावकों के लिए भी महत्वपूर्ण होंगे। वे यह जान सकेंगे कि विद्यालयी वातावरण आदर्श या यथार्थ की परिस्थितियों में किस प्रकार छात्र–छात्राओं पर प्रभाव डालते हैं। अभिभावक छात्र–छात्राओं की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन्हें उनके विद्यालय के चयन में सहयोग कर सकेंगे।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों व शैक्षिक प्रकाशकों एवं शैक्षिक नीति निर्माताओं के लिए भी इस दृष्टि से उपयोगी होगा कि वे यह जान सकेंगे कि विद्यालयी वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा को किस प्रकार प्रभावित करता है और उसी अनुरूप पर विद्यालयी वातावरण में सुधार संबंधी उपायों में अपने स्तर से उचित सहयोग कर सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, वी0 (1991) बरेली जिले के निम्न माध्यमिक स्तर पर किशोरों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन, अप्रकाशित एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

कनौजिया, आर0 (2000) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के निर्धारण का अध्ययन। अप्रकाशित पी0एच0डी0 थीसिस, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।

कनौजिया, एल0 (2001) विद्यार्थियों का स्वत्वबोध एवं प्रत्यक्षित विद्यालयी वातावरण लखनऊ शहर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।

कुशवाहा, ओ0पीव (2001) हाईस्कल स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारकों आ अध्ययन, अप्रकाशित एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

ओवेराय, एस0सी0 (2003) शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श, मेरठ इण्टरनेशन पब्लिशिंग हाउस।

आनन्द, एस0 (2004) परसेप्सन ऑफ स्कूल क्लाईमेट : ए सोशल, साईकालॉजीकल एण्ड एजूकेशनल स्टडी ऑफ सेकेन्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स अप्रकाशित पी0एच0डी0 थीसिस लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

शर्मा, आर0ए0 (2007) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के निर्धारण का अध्ययन, अप्रकाशित पी0एच0डी0 थीसिस लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

श्रीवास्तव, डी0एन0 (2007) अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा।

कपिल, एच0के0 (2008) सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में), अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।